नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से वेणीसंहार की समीक्षा

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी
सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

रूपक के दस भेदों में वेणीसंहार 'नाटक' नामक भेद के अन्तर्गत आता है क्योंकि इसमें नाटक के अधिकांश लक्षण घटित हो जाते हैं। नाटक के रूप में वेणीसंहार की समीक्षा से पूर्व नाटक के लक्षण को जान लेना अपेक्षित होगा। साहित्यदर्पणकार आचार्य विश्वनाथ के अनुसार नाटक का लक्षण इस प्रकार है-

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात् पञ्चसन्धिसमन्वितम्।
विलासर्द्ध्यादिदुणवद्युक्तं नानाविभूतिभिः।।
सुखदुःखसमुद्भूतिः नानारससमन्वितम्।
पञ्चादिका देशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्त्तिताः।।
प्रख्यातवंशो राजर्षिधीरोदात्तः प्रतापवान्।
दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मतः।।
एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।
अङ्गमन्ये रसाः सर्वे कार्यो निर्वहणेद्भुतः।।

अर्थात् नाटक का चरित्र इतिहास और पुराण आदि में प्रसिद्ध होना चाहिए। वह मुख आदि पाँच सन्धियों से और अनेक विभूतियों से युक्त, सुख और दुःख की उत्पत्तिवाला, जैसे कि राम और यधिष्ठिर आदि के वृत्तान्तों से स्पष्ट से स्पष्ट है। शृङ्गार आदि अनेक रसों से अव्यवहित होता है। उसमें पाँच से लेकर दश अङ्क तक कहे गए हैं। नायक प्रख्यात वंश का राजर्षि जैसे दुष्यन्त आदि धीरोदात्त और प्रतापी, दिव्य जैसे श्रीकृष्ण आदि और दिव्यादिव्य अर्थात् जो दिव्य होकर भी अपने में नरत्व का

अभिमान करने वाले जैसे राम आदि और गुणवान् होना चाहिए। अङ्गी (प्रधान रस) एक ही होना चाहिए शृङ्गार या वीर। अन्य सब रस अङ्ग (अप्रधान) होते हैं। निर्वहण सन्धि में अद्भुत रस होना चाहिए।

अब इस कसौटी पर वेणीसंहार को कसा जाना है। इसका विश्लेषण आगे किया जा रहा है।

नाटकं ख्यातवृत्तं स्यात्-

अर्थात् नाटक का कथानक इतिहास और पुराण आदि में प्रसिद्ध होना चाहिए। वेणीसंहार की कथा महाभारत में प्राप्त होती है जो अशेष विश्व में ख्यात है। महाकवि भट्टनारायण ने महाभारत की इस कथा को नवनवोन्मेषशाललिनी प्रतिभा और अनुपम कल्पनाशक्ति से एक रसपूर्ण एवं मनोरम नाटक का स्वरूप दे दिया। अतः 'नाटकं ख्यातवृत्त स्यात्' की कसौटी पर वेणीसंहार खरा उतरता है।

पञ्चसन्धिसमन्वितम्-

नाटक में पञ्चसन्धियों का होना आवश्यक है-

यथासङ्ख्येन जायन्ते मुखाद्या पञ्चसन्धयः।
मुखं प्रतिमुखं गर्भः सावमर्शोपसंहृतिः।।

अर्थात् पञ्चसन्धियाँ हैं-मुख, प्रतिमुख, गर्भ, अवमर्श तथा निर्वहण।

यहाँ ध्यातव्य है कि पञ्च अर्थप्रकृतियों और पञ्च कार्यावस्थाओं का क्रमशः संयोजन होकर उनके आधार पर नाटक के शरीर का सन्धियों के रूप में विभाजन किया जाता है। इसे अग्राङ्कित तालिका से और स्पष्ट किया जा सकता है-

कार्यावस्था	अर्थप्रकृति	सन्धि
आरम्भ	बीज	मुख
यत्न	बिन्दु	प्रतिमुख
प्रत्याशा	पताका	गर्भ
नियताप्ति	प्रकरी	अवमर्श
फलागम	कार्य	उपसंहृति/निर्वहण

वेणीसंहार नाटक के प्रथमाङ्क में मुखसन्धि भीमसेन ककी प्रतिज्ञा में दिखाई देती है। अतः इस सन्धि का दर्शन प्रथमाङ्क में आद्यन्त उपलब्ध होता है। द्वितीय अङ्क में प्रतिमुख सन्धि परिलक्षित होती है। गर्भ सन्धि कि उपस्थिति तृतीय एवं चतुर्थ अङ्क में प्राप्त होती है। नाटक के पञ्चम एवं षष्ठ अङ्क में विमर्श सन्धि दृष्टिगोचर होती है। निर्वहण सन्धि दुर्योधन के वध के समय परिलक्षित होती है। उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि सन्धि योजना की सफलता से नाटक में सौन्दर्य की वृद्धि अवश्य हुई है।

पञ्चादिका देशपरास्तत्राङ्काः परिकीर्त्तिताः-

किसी भी नाटक में कम से कम पाँच तथा अधिक से अधिक दश अङ्क होना चाहिए। वेणीसंहार में कुल छः अङ्क हैं।

प्रख्यातवंशो राजर्षिधीरोदात्तः प्रतापवान्। दिव्योऽथ दिव्यादिव्यो वा गुणवान्नायको मतः-

इस सिद्धान्त के अनुसार नाटक का नायक प्रख्यात वंश का धीरोदात्त प्रतापी राजा होता है अथवा दिव्य या दिव्यादिव्य गुणवान् पुरुष नायक होता है। वेणीसंहार का नायक भीमसेन प्रख्यात कुरुवंश के हैं। भीमसेन धीरोद्धत नायक के गुणों से सम्पन्न हैं।

एक एव भवेदङ्गी शृङ्गारो वीर एव वा।अङ्गमन्ये रसाः सर्वे.........-

नाटक का मुख्य रस शृङ्गार अथवा वीर होता है और अन्य रस उसके सहायक होते हैं। वेणीसंहार में वीर रस मुख्य है तथा शृङ्गार, भयानक, हास्य आदि (रस) उसके अङ्ग रूप से निबद्ध हैं। अङ्गी शृङ्गार रस का कतिपय उदाहरण है-

चञ्चभुजभ्रमितचण्डगदाऽभिघातसञ्चर्णितोरुयुगलस्य सुयोधनस्य।
स्त्यानाऽवनद्धघनशोणितशोणपाणिरुत्तंसयिष्यति कचांस्तव देवि! भीमः।।

इस उदाहरण में फड़कती हुई भुजाओं से गदा को घुमाकर दुर्योधन की जङ्घाओं को तोड़ने तथा उसके गाढ़े रक्त से लिप्त हाथों से द्रौपदि के केश बाँधने की बात कहकर भीमसेन उसे आश्वासन देते हैं तथा अपनी वीरता का परिचय देते हैं।

युद्ध की रणभेरी सुनकर भीम के हृदय में जिस उत्साह का सञ्चरण होता है, उससे भी वीर रस मूर्तिमान् प्रतीत होता है। चतुर्थ अंक में भीमसेन भागती हुई सेनाओं को सम्बोधित करते हुए बड़े ओजस्वी शब्दों में ओजोगुणयुक्त वाणी में दूसरों के हृदय में भी मानो वीरभाव जाग्रत करना चाहते हैं।

अङ्गरस के रूप करुण, शृङ्गार आदि का चित्रण प्राप्त होता है।

अङ्ग करुण रस का उदाहरण है-

मया पीतं पीतं तदनु भवताऽम्बास्तनयुगं
मदुच्छिष्टैर्वृत्तिं जनयसि रसर्वत्सलतया।
वितानेष्वप्येवं तव मम च सोमे विधिरभू-
न्निवापाऽम्भः पूर्वं पिबसि कथमेवं त्वमधुना।।

कार्यो निर्वहणेद्भुतः-

निर्वहण सन्धि में अद्भुत रस की अभिव्यञ्जना होती है। वेणीसंहार इस कसौटी पर खरा उतरता है।

इस प्रकार नाट्यशास्त्रीय दृष्टि से वेणीसंहार एक सफल नाटक है। नाट्यशास्त्रीय आचार्यों ने इसके उद्धरणों को अपने ग्रन्थों में स्थान देकर इस नाटक की महत्ता की स्थापना की है।

डॉ0 धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी